© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 01 | January – March 2018

हिन्दी–कहानियों में नारी की बदलती मानसिकता

डा. सुदेश कुमारी, हिन्दी प्राध्यापिका

आज की नारी पहले समाज में स्वयं को प्रतिष्ठित करती है, बाद में किसी रिश्ते में बँधकर उसके अनुसार चलती है। अतः दूसरों के साथ सारे संबंध स्वार्थ पर आधारित है। दिखावे और स्वार्थ पर आधारित संबंधों में मधुरता लुप्त होती है। अब नारी अपने जीवन का फैसला अपनी इच्छा से करके, बंधनों से मुक्त होकर अपनी शैली से जीने में विश्वास रखती है और इसी के लिए वह निरंतर संघर्ष करती है। इसी संघर्ष–भावना से उसकी मानसिकता, उसकी सोच तथा उसके जीवन के मूल्यों में परिवर्तन आया है।

बहुधा यही कहा सुना जाता है कि पुरूषवर्ग इनकी भावनाओं का सम्मान नहीं करता, लेकिन यथार्थ में, पुरूषों से अधिक ऐसी महिलाएँ मिलेंगी, जो स्वयं महिलाओं को कष्ट एवं हानि पहुँचाती रहती हैं। यह नारी–जीवन की सबसे बड़ी समस्या है, जिसकी चर्चा बहुत ही कम होती है क्योंकि यह समस्या समाज की चमड़ी पर न होकर समाज के आंतरिक शरीर में है। 'महिलाएँ ही महिलाओं की सबसे बड़ी शत्रु हैं। बहुतेरे लोगो का यह कहना है।'[1]

भारतीय संदर्भ में घरेलू महिलाओं की संख्या सर्वाधिक है। इनका जीवन सीमित है। श्रद्धा, व्रत, पूजा–पाठ, दान–पुण्य, चूल्हा–चौका, बच्चों का लालन–पालन, पति के लिए न्यौछावर होना, बुजुर्गो की सेवा में अपना भविष्य होम कर देना, धैर्य, क्षमा, ममता, दया, हर क्षेत्र की लाजवाब मिसालें इसमें पाई जाती हैं। मगर विडंबना यह है कि 'इस भोलेपन को, इस त्याग को जिसके कारण वे चंद सालों में ही बीमार और बूढ़ी हो जाती हैं–आप क्या कहेंगे? .....थोड़ी भी ईमानदारी से देखने पर यह बात ज़ाहिर हो जाती है कि अधिकारों के प्रति उदासीनता उन्हें कितनी महँगी पड़ती है और पुरूष को कितनी फायदेमंद। [2]

इसकी तुलना में, स्त्रियों का एक दूसरा वर्ग उभरकर सामने आया है, जो शहरी है, कामकाजी है। इनमें अधिकार उच्च मध्यवर्ग से आई हैं, शिक्षा के बल पर इनमें उत्साह है। बाहर की दुनिया से जोड़ने का एक सुख है। वे अक्सर तरोताजा दिखाई देते हैं। उनका सामाजिक चरित्र है। व्यापक क्षेत्र भी उनके पास है। 'अधिकांश सामाजिक सर्वेक्षणों, की, प्रेम, विवाह, यौन–संबंध, परिवार आदि विषयों की सामग्री प्रायः इसी वर्ग से जुटाई जाती है।'[3]

यहाँ भी पति, परिवार, नाते–रिश्तेदार हैं, पर अपनी बदली हुई परिस्थितियों में, पहले वर्ग की स्त्रियों से भिन्न। अतः स्वाभाविक रूप से पारिवारिक कलह, असंतोष और ज़िम्मेदारियों के यहाँ बिलकुल बदले हुए रूप प्राप्त होते हैं। घोर प्रच्छन्न और अतिशय उत्पीड़क और थोडा–सा गहरे में जाएँ तो एक और महत्त्वपूर्ण बात पता चलती है कि इस समूह की नारियों का शोषण दोहरा–तिहरा है।

नारी–उत्पीड़न के प्रश्न को बारिकी से देखने पर यह अनुभव होता है कि समाज के सभी वर्गो में शिक्षित या अशिक्षित कामकाजी या घरेलू महिलाओं में महिलआएँ भी नारी को प्रताड़ित करने में बराबर की हिस्सेदार हैं। कैसी विडंबनापूर्ण स्थिति है इस सारे घटनाक्रम में महिलाएँ भी महिलाओं के प्रति पुरूषों के समान भूमिका निभाती रही हैं।

इस उत्पीड़न में वे कभी सास के रूप में विद्यमान है, कभी जेठानी और ननद के रूप में और कभी पास–पड़ोस की महिलाओं के रूप में। ...अपने यौवन में सताई गई महिला जब वृद्धावस्था तक पहुँचती है तो अतीत की स्मृतियों में छिपे हुए घावों का बदला वह किसी और से नहीं, अपनी पुत्रवधू से ही लेने लगती है। यह क्रिया सचेतन रूप में हो न हो, किंतु होती है। .....एक मनोवैज्ञानिक तथ्य और भी है। जब नारी को बाह्य संसार से वंचित करके घर की चारदीवारी तक सीमित कर दिया गया तो स्वभावतः उस के मन में घर पर अपना स्वामित्व स्थापित करने की भूख जाग्रत हो गई।'[4]

बीसवीं शताब्दी की महिला कहानीकारों की कहानियों में ऐसी नारियों का भी चित्रण मिलता है, जो अपने पर बिलकुल रोक नहीं लगातीं। वे विवाहित पुरूषों को रिझाकर, विवाहित स्त्रियों से उनका पति छीनकर उन स्त्रियों के साथ अन्याय करती हैं। विवाहित जीवन में तीसरे व्यक्ति की उपस्थिति या उपस्थिति की धारणा शक खड़ा कर देती है। अपने जन्मजात शक्की स्वभाव के कारण अधिक स्त्रियाँ शक की व्याधि से पीड़ित रहती हैं। उन्हें हर दूसरी नारी पर शक होता है। ममता कालिया स्वयं एक स्त्री हैं, पर उन्होंने महिलाओं की इस प्रवृत्ति पर खूब प्रकाश डाला है। जैसे कि अपनी कहानी 'सीट नंबर छह में।'[5]

मन्नु भंडारी की कहानियों में पारिवारिक, सामाजिक समसयाओं के चित्रण की अपेक्षा नारी–मनोविज्ञान का चित्रण अधिक और सफल रूप में हुआ है। वे नारीजन्य ईर्ष्या और नीचता को सहानुभूति का रूप देकर उसे मार्मिकता से प्रस्तुत करती हैं। मोहल्ले में रहकर एक–दूसरे की बुराई में अपना मनोरंजन करने वाली स्त्रियों का सजीव चित्र इनकी 'बच्चे और बरसात और दीवार कहानियों में देखा जा सकता है। [6]